TDC-2nd (H)

समाजीकरण में जी॰ एच॰ मीड का सिद्धान्त
(Theory of G.H MEAD in Socialization)

जी॰ एच॰ मीड ने समाजीकरण की प्रक्रिया को 'मन, स्व और समाज' के आधार पर समझाने का प्रयास किया है। इसकी विस्तृत व्याख्या 'माइण्ड सेल्फ एण्ड सोसाइटी' (Mind, Self and Society) नामक पुस्तक में मिलता है।

मीड के समाजीकरण की व्याख्या व्यक्ति और समाज के संबंधों का अध्ययन है। इन्होंने सामाजिक क्रिया को समाज के लिए अनिवार्य माना है। उनकी दृष्टि से सामाजिक क्रिया समाज के तथ्य का निर्माण करती है। सामाजिक क्रिया से उनका तात्पर्य दो या अधिक व्यक्तियों के बीच आदान-प्रदान की क्रिया से है जो व्यवस्थित श्रम-विभाजन के अन्तर्गत आते हैं। यहाँ मीड ने 'चेतना की क्रिया' की अवधारणा पर बल दिया है। इनके अनुसार मानव मन, सामाजिक स्व और समाज की संरचना, इन तीनों तत्वों के संकुल से सामाजिक अन्तःक्रिया की शुरुआत होती है, जो समाजीकरण की आधारशिला है। इन तीनों तत्वों की व्याख्या निम्न प्रकार से है:—

(1) मन (Mind):—

मीड ने मन को एक आवश्यक घटना माना है। मन बालक के लिए निजी चेतना का आधार है। इसमें अर्थपूर्ण हाव-भाव निहित है जो अंधाधुन्ध प्रयोगात्मक शारीरिक गतियों के बीच से चुने जाते हैं। मीड के अनुसार मन का विकास तीन अवस्थाओं के गुजरने के बाद बालक में होता है। ये निम्नलिखित अवस्थाएँ है:—

(i) जब बालक पारम्परिक संकेतों को समझने तथा उसका उपभोग करने योग्य

हो जाता है, तब मन (Mind) का उदय होता है। बालक मन का विकास अपने तथा दूसरों की अर्थपूर्ण भाव-भंगिमाओं तथा अर्थहीन भाव-भंगिमाओं में अन्तर करने की क्षमता के जन्म के साथ शुरू हो जाता है। अर्थपूर्ण भावभंगिमाओं को मीड ने पारम्परिक संकेत कहा है। उदाहरणस्वरूप — भृकुटी - होंठ संकुचन, आँख मटकाना, हस्त संचालन आदि पारम्परिक संकेत है। इस प्रकार के संकेतों की खोज मन करता है तथा समाज में उसका प्रयोग करता है।

(ii) जब बालक दूसरों की भूमिका को ग्रहण करने के लिए संकेतो के उपयोग करने योग्य हो जाता है, तब मन का विकास होता है। कोई भी बालक पारम्परिक संकेतों को दूसरों के साथ अन्तक्रिया के क्रम में ग्रहण करता है। ऐसी स्थिति में बालक जिस व्यक्ति के साथ अन्तःक्रिया कर रहा होता है, उसके हाव-भावों को ग्रहण करने की क्षमता उसमें उत्पन्न हो जाती है। बालक दूसरों के दृष्टिकोण को समझने योग्य हो जाता है। बालक उसे व्यवहार में लाता है। मीड ने इस प्रक्रिया को 'दूसरे की भूमिका को ग्रहण करना' कहा है।

(iii) जब बालक क्रिया के वैकल्पिक मार्ग का 'कल्पना' में पूर्वाभ्यास' करने को योग्य हो जाता है तो उसमें गतिशीलता आती है। मीड का कहना है कि मन बौद्धिक क्रिया की एक प्रक्रिया है। क्रिया के पूर्व उस पर विचार करता है, क्रिया के विकल्पों को तैयार करता है, फिर किए जानेवाले क्रिया का चयन करता है, अपने निर्णय के क्रियान्वयन के पूर्व 'कल्पना' के पूर्वाभ्यास' करता है। स्व और समाज के अस्तित्व के लिए मानव में इस प्रकार की क्षमता का विकास होना अनिवार्य माना गया है।

इस प्रकार, उपर्युक्त तीन प्रक्रियाओं के माध्यम से मन का विकास होता है। बालक मन संकेतों का सृजन करता है, उसका अर्थबोध विकसित करता है तथा उसे व्यवहार में लाता है।

(2) स्व (self) :—

मीड के अनुसार 'स्व' एक ऐसी वस्तु है जिसका विकास होता है, यह जन्म के समय विद्यमान नहीं रहता, किन्तु सामाजिक अनुभव तथा क्रिया की प्रक्रिया में उत्पन्न होता है।

'मैं और मुझे' :- मीड के अनुसार 'मैं और मुझे' का संयुक्त रूप स्व है। मैं व्यक्ति के संवेगात्मक प्रवृत्तियों तथा प्राकृतिक व्यवहार का प्रतिनिधित्व करता है। इसका निर्माण कल्पना तथा खोज पर आधारित है। मुझे सामाजिक व्यवहार का प्रतिनिधित्व करता है। इसका निर्माण दूसरों के अन्तःक्रिया के फलस्वरूप होता है।

मीड ने स्व के विकास के तीन अवस्थाओं का उल्लेख किया है। ये हैं:—

(i) अनुकरणात्मक अवस्था :—

यह अवस्था सामान्य तौर पर बालक के दूसरे वर्ष से प्रारम्भ होता है। इस अवस्था में बालक बड़ों के व्यवहारों का अनुकरण करने लगता है।

(ii) क्रीड़ावस्था :—

यह अवस्था सामान्य तौर पर तीसरे वर्ष से शुरू हो जाती है। इस अवस्था में बालक माता-पिता तथा अन्य महत्वपूर्ण दूसरे की भूमिका का अनुकरण करने लगता है।

(iii) आचरण की अवस्था :—

यह अवस्था प्रौढ़ता का सूचक है, इसका प्रारम्भ सामान्य तौर पर 6-7 वर्षों से शुरू होता है। इस अवस्था में दूसरों की भूमिका को ग्रहण करने की क्षमता का विकास होने लगता है।

(3) समाज (society) :—

मीड के समाजीकरण के सिद्धान्त का तीसरा आयाम समाज है। उनके अनुसार यह मानव की अमूल्य कृति है। यह एक संगठित क्रिया है। जो सामान्यीकृत दूसरे द्वारा चालित और नियंत्रित होती है। यह वह स्थल है जहाँ स्व और दूसरे मिलते हैं, पारस्परिक व अन्योन्याश्रित क्रियाएँ करते हैं, परस्पर सहयोग करते हैं, अनुकूलन, अभियोजन, संघर्ष, प्रतिस्पर्धा और समझौता आदि से जुड़े होते हैं। व्यक्ति के मैं और मुझे की धारणा का विकास यहीं होता है। यही क्रिया स्थल है जहाँ व्यक्ति महत्वपूर्ण दूसरे और सामान्यीकृत दूसरे के सम्पर्क में आकर अपना विकास करता है।

इस प्रकार, स्पष्ट होता है कि मीड ने अपनी कृति माइण्ड, सेल्फ और सोसाइटी में व्यक्ति के समाजीकरण की प्रक्रिया को बड़े ही स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है। व्यक्ति के स्व के विकास के बाद यह जैविकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी में परिणित हो जाता है और समाज के क्रियाशील सदस्य के रूप में बने रहते हैं।

आलोचना (Criticism) :— मीड का समाजीकरण के सिद्धान्त का आधार प्रतीकात्मक अन्तक्रियावाद है। इस सिद्धान्त में मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं का उपयोग कर व्यक्ति के समाजीकरण को प्रस्तुत किया है। इन्होंने बालक को 'मन व स्व' को आधार मानकर समाजीकरण का सिद्धान्त दिया।